पाठ 21

यौन संचारित संक्रमण एवं प्रजनन संक्रमण : समय पर सावधानी

यौन संचारित एवं प्रजनन तन्त्र संक्रमण जीवन में हताशा और निराशा पैदा करते हैं। यह विषय संवेदनशील होने के साथ संकोच और भ्रान्तियों से जुड़ा हुआ है इस कारण उपायों से अनभिज्ञता रहती है। इस सम्बंध में सही जानकारी होना आवश्यक है।

भारत में यौन संचारित संक्रमण प्रमुख जनस्वास्थ्य समस्या है क्योंकि ये बड़े पैमाने पर स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव डालते हैं। यह स्वास्थ्य प्रदाताओं के लिए एक गंभीर चुनौती है, जिनमें से बहुत से लोगों को किशोर यौन स्वास्थ्य समस्या को हल करने में कठिनाई अनुभव होती है। यौन संचारित संक्रमणों के होने से एचआईवी होने का खतरा बढ़ता है। इसलिए यौन संचारित संक्रमणों की रोकथाम और नियंत्रण न केवल इनसे होने वाले दुष्प्रभाव में कमी लाने के लिए महत्त्वपूर्ण हैं बल्कि एचआईवी/एड्स की रोकथाम के लिए भी आवश्यक हैं। यौन व्यवहार एवं उत्तरदायित्वों को समझ कर ही इसे रोका जा सकता है।

यौन संचारित संक्रमण या एस.टी.आई. (Sexually Transmitted Infection) क्या है ?

वे संक्रमण जो यौन सम्पर्क के माध्यम से फैलते हैं यौन संचारित संक्रमण (Sexually Transmitted Infection) कहलाते हैं। इन संक्रमणों का कारण विषाणु (वायरस), जीवाणु (बैक्टीरिया) या फफूँद हो सकते हैं। विश्व भर में 10 लाख से भी अधिक व्यक्ति प्रजनन तन्त्र के संक्रमणों एवं यौन संचारित संक्रमणों के कारण मृत्युग्रस्त होते हैं। इस संख्या में एचआईवी–एड्स से मरने वाले रोगियों की संख्या शामिल नहीं है। यह उल्लेखनीय तथ्य है कि 50 से 60 प्रतिशत यौन रोगी 20 वर्ष से कम उम्र के हैं।

यौन संचारित संक्रमणों के प्रकार

– सुजाक (गोनोरिया)
– क्लेमाडिया
– आतशक (सिफलिस)
– ब्यूबोस (जाँघ में छाले)
– जेनिटल वार्टस (लैंगिक छाले)
– ट्राइकोमोनिएसिस

बहुत से यौन संचारित संक्रमणों में, प्रारम्भिक लक्षणों (संकेतों) को पहचानना काफी मुश्किल होता है। बहुत सारे लोग तब तक इनकी उपेक्षा (लापरवाही) करते रहते हैं, जब तक कि गंभीर क्षति (हानि) न पहुँच जाए। इस लापरवाही के कारण प्रारंभिक अवस्था में निदान एवं उपचार नहीं हो पाता। कई बार यौन–संचारित संक्रमणों के लक्षण स्पष्ट नहीं होते हैं। ऐसी स्थिति में एक संक्रमित व्यक्ति बिना जानकारी के ही दूसरे को संक्रमित कर सकता है।

स्त्रियों में यौन–संचारित संक्रमण

स्त्रियों की प्रजनन अंग की रचना के कारण योनि से गर्भाशय मुख तथा अन्य प्रजनन अंगों तक संक्रमण होने का खतरा होता है। जैव वैज्ञानिक रूप से पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियाँ यौन संचारित संक्रमणों के लिए ज्यादा जोखिम के दायरे में होती हैं, क्योंकि यौन संबंधों के दौरान स्त्रियों की अंतः नरम त्वचा (झिल्ली) रोग जनन के लिए खुले संपर्क में रहती है। इसके अलावा पुरुषों की अपेक्षा यौन संचारित संक्रमण ग्रस्त स्त्री में ज्यादा समय तक लक्षण नहीं दिखाई देते। अतः देर से और अपर्याप्त चिकित्सा सहायता प्राप्त हो पाती है। स्त्रियों में इन संक्रमणों से होने वाली सर्वाधिक जटिलताएँ हैं – गर्भाशय के बाहर गर्भ ठहरना (एक्टोपिक प्रैगनैंसी) गर्भपात, बाँझपन आदि।

किशोरों के लिए यौन संचारित संक्रमण के खतरे

किशोर यौन संचारित संक्रमण के प्रति अपने व्यवहार के कारण उच्च जोखिम के दायरे में होते हैं। 25 वर्ष से कम आयु के युवाओं में यौन–संचारित संक्रमणों की जोखिम सर्वाधिक पायी गयी है। यौन सक्रिय किशोरों की रुग्णता दर में यौन संचारित संक्रमण एक प्रमुख कारण पाया गया है।

– उपचार और खतरे

यौन संचारित संक्रमणों का इलाज सम्भव है, लेकिन रोगी शर्म संकोच के कारण डॉक्टर के पास नहीं जाता है। कभी–कभी यौन संक्रमित व्यक्ति में बाहरी लक्षण नजर नहीं आते या लक्षण आकर फिर कम हो जाते हैं। इसलिए ऐसे व्यक्तियों का पूरा इलाज नहीं हो पाता है। इसका इलाज नीम–हकीमों से दूर रह कर सरकारी अस्पताल में या किसी प्रशिक्षित चिकित्सक से ही कराना चाहिए।

यौन संक्रमित व्यक्ति के लिए एचआईवी–एड्स का खतरा 5 से 10 गुना बढ़ जाता है। यौन संचारित संक्रमित व्यक्ति को चाहिए कि जब तक पूरा उपचार न हो जाए तब तक किसी से यौन सम्पर्क नहीं बनाए। ऐसे शारीरिक सम्पर्क के दौरान बचाव के लिए कंडोम का उपयोग करना चाहिए। पति–पत्नी में से कोई यदि यौन संक्रमण से पीड़ित हो तो दोनों को इसका इलाज कराना चाहिए। कोई भी व्यक्ति एक समय में एक से अधिक यौन संक्रमणों से पीड़ित हो सकता है।

प्रजनन तन्त्र संक्रमण (Reproductive Tract Infection)

स्त्री या पुरुष के प्रजनन अंगों के संक्रमण को प्रजनन तन्त्र संक्रमण कहते हैं। यह सूक्ष्म जीवाणुओं, विषाणुओं, परजीवी या फफूँद से होता है। ज्यादातर यौन संचारित संक्रमण भी प्रजनन तन्त्र को प्रभावित करते हैं।

स्त्री तथा पुरुषों में प्रजनन तन्त्र संक्रमण एक समस्या है। इससे पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियाँ जल्दी प्रभावित होती हैं। स्त्रियों का प्रजनन तन्त्र जल्दी संक्रमित होता है, क्योंकि शरीर की रचना से वे ज्यादा संवेदनशील व ग्रहणशील होती हैं। प्रजनन स्वास्थ्य से जुड़ी सामाजिक, सांस्कृतिक वर्जनाओं के कारण स्त्रियाँ एवं किशोरियाँ स्वतन्त्र रूप से इस संक्रमण के बारे में चर्चा नहीं कर पाती हैं, और न ही चिकित्सा सहायता ले पाती हैं। वे चुपचाप परेशानियाँ झेलती रहती हैं। 'प्रजनन तन्त्र संक्रमण' मुख्य रूप से माहवारी के दौरान स्वच्छता न रखना, असुरक्षित गर्भपात, असुरक्षित तरीके से प्रसव, बार–बार असुरक्षित गर्भ जाँच, जननागों की जांच के लिये संक्रमित औजारों का उपयोग एवं असुरक्षित यौन सम्बन्धों के कारण होता है।

प्रजनन तन्त्र संक्रमण के लक्षण

यह देखा गया है कि स्त्रियों में प्रजनन तन्त्र संक्रमण के लक्षण देर से प्रकट होते हैं। सामान्य लक्षण निम्नलिखित हैं –

- जननांग क्षेत्र में लाली आना, खुजली एवं जलन होना।
- योनि या लिंग से स्राव में दुर्गन्ध आना।
- पेट के निचले हिस्से में दर्द होना।
- पेशाब करते समय जलन या दर्द होना।
- लिम्फ ग्रन्थियों में सूजन होना।
- स्त्री और पुरुष के जनन अंगों पर छाले या घाव होना।

इसके अतिरिक्त इस संक्रमण से प्रभावित रोगी को प्रायः नींद न आना, कमर में दर्द कमजोरी आदि की शिकायत रहती है।

प्रजनन तन्त्र संक्रमण होने के निम्नलिखित कारण हैं –

- निजी स्वच्छता एवं साफ सफाई में कमी।
- माहवारी के दौरान शारीरिक स्वच्छता का ध्यान नहीं रखना।
- संक्रमित व्यक्ति के सम्पर्क में आना।
- अस्वच्छ हाथों से या जीवाणु युक्त औजारों से प्रजनन तन्त्र की जाँच करना।
- शिशु जन्म, गर्भपात या कॉपर–टी लगाने के दौरान लगी चोट या क्षति।
- काफी लम्बे समय तक एंटीबायोटिक दवाओं के उपयोग से योनि में पाए जाने वाले लाभदायक बैक्टीरिया तथा फफूँदी नाशक तत्त्वों का नष्ट हो जाना।

प्रजनन तन्त्र संक्रमण की रोकथाम तथा बचाव के उपाय

- प्रतिदिन स्नान व सम्पूर्ण शारीरिक सफाई का ध्यान रखें।

- माहवारी के दौरान साफ कपड़ा उपयोग में लाएँ और दिन में कम से कम दो से तीन बार अवश्य बदलें। कपड़ा धोकर धूप में अवश्य सुखाएँ।
- साफ व सूखे अधोवस्त्र पहने। नमी व गीलेपन से हानिकारक जीवाणुओं को बढ़ावा मिलता है फलतः संक्रमण की सम्भावनाएँ बढ़ जाती हैं।
- जननांग परीक्षण तथा प्रसव, गर्भपात या कॉपर–टी, नसबंदी के दौरान जीवाणु रहित दस्तानों तथा औजारों का प्रयोग सुनिश्चित करें।

रोकथाम व बचाव के अन्य उपाय

साधारणतः डॉक्टर इन संक्रमणों से बचाव के लिए निम्नलिखित उपाय बताते हैं –

- यदि जनन अंग में कोई संक्रमण है, तो यौन संबंधों से बचना।
- विवाह से पूर्व ब्रह्मचर्य का पालन करें।
- जैसे ही कोई लक्षण दिखे, तुरंत डाक्टर से संपर्क करना।
- नियमित रूप से उपचार कराना क्योंकि अधूरा इलाज ज्यादा घातक हो सकता है।

प्रजनन स्वास्थ्य अधिकार
• प्रजनन फैसलों में समानता का अधिकार। • प्रजनन स्वास्थ्य सेवाएं प्राप्त करने का अधिकार। • सूचना और शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार।

यौन संचारित संक्रमण व भ्रान्तियाँ

क्रम	भ्रान्ति	तथ्य
1.	चौराहा लाँधने से संक्रमण हो जाता है।	यह सत्य नहीं है, चौराहा लाँघने और यौन संक्रमण में आपस में कोई सम्बन्ध नहीं है।
2.	किसी व्यक्ति द्वारा पेशाब किये गये स्थान से गुजरने से ये रोग होता है।	पेशाब में यौन संक्रमण के कारक होते हैं पर बाह्य वातावरण में नष्ट हो जाते हैं केवल यौन सम्पर्क से ही दूसरे के शरीर में जाते हैं।
3.	यौन संक्रमित संक्रमण, पिछले जन्मों के पापों की सजा है।	ऐसा नहीं है, बल्कि यह इसी जन्म के किये गये कामों का प्रतिफल है।
4.	किसी तरह के लक्षणों के बिना भी यौन संक्रमित रोग हो सकते हैं।	यद्यपि यौन संक्रमित रोगों के पहचानने लायक लक्षण होते हैं परन्तु कुछ ऐसे भी होते हैं जिनका कोई लक्षण नहीं होता जैसे स्त्रियों में सुजाक (Gonorrhea) के कोई लक्षण दिखाई नहीं देते और पुरूषों में बहुत बार इसका पता ही नहीं चलता। यदि किसी को डर है कि वह यौन संक्रमित है, तो यह आवश्यक है कि वह डॉक्टर से जाँच करा लें।

याद रखें

- ज्यादातर यौन संचारित संक्रमण प्रारम्भिक अवस्था में उपचार योग्य तथा ठीक होने वाले होते हैं।
- एक ही समय में एक से ज्यादा यौन–संचारित संक्रमण हो सकते हैं।
- यदि किसी व्यक्ति को कोई यौन–संचारित संक्रमण है तो वह यौन सम्पर्क से बचे व अपना उपचार कराये।
- स्त्रियों में बिना लक्षणों के यौन–संचारित संक्रमण हो सकते हैं।
- यौन–संचारित संक्रमणों से ग्रस्त लोग, एड्स से ग्रसित होने के लिए 5 से 10 गुणा ज्यादा जोखिम में होते हैं।
- स्त्रियों को यौन संचारित संक्रमणों के होने की ज्यादा सम्भावनाएँ होती हैं। यह उनकी गर्भावस्था तथा प्रसव एवं शिशु को प्रभावित कर सकते हैं।
- जो किशोर जोखिमपूर्ण यौन व्यवहारों में लिप्त हो जाते हैं, उन्हें यौन संचारित संक्रमण होने की सम्भावना अधिक होती है।
- समाज में यौन संचारित संक्रमणों से संबंधित बहुत सारी भ्रांतियाँ/गलतफहमियाँ प्रचलित हैं, जिनका निराकरण योग्य डॉक्टर के परामर्श से किया जा सकता है।
- यौन संचारित संक्रमण का शुरू में ही उपचार किया जाना चाहिए, और इसका उपचार केवल योग्य डॉक्टर द्वारा ही कराया जाना चाहिए।
- अधूरा एवं नीम–हकीमों द्वारा किया गया उपचार ज्यादा खतरनाक हो सकता है।

महत्त्वपूर्ण बिन्दु

- यौन सम्पर्क के माध्यम से फैलने वाले रोग यौन संचारित संक्रमण कहलाते हैं। ये संक्रमण विषाणु, जीवाणु अथवा फफूँद द्वारा फैलते हैं।
- यौन संचारित संक्रमण महिला अथवा पुरूष दोनों को हो सकते हैं। महिलाओं को ये रोग होने की सम्भावना अधिक है। प्रायः महिलाओं में इनके लक्षण भी स्पष्ट नहीं होते।
- इन संक्रमणों से बचाव के लिए जननांगों की नियमित सफाई व यौन जागरूकता आवश्यक है। रोग होने पर अविलम्ब तथा निःसंकोच डॉक्टर से परामर्श लेना चाहिये।

जानें, समझें और करें

1. क्या आप जानते हैं ?

- अपने मित्रों को यौन संचारित संक्रमण के प्रति सावधान करने के लिए आप क्या करेंगे ?

.....

.....

- यौन संचारित संक्रमण से कैसे बचाव कर सकते हैं ?

.....

.....

2. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर हाँ अथवा नहीं में दीजिए –

क्र.सं.	वक्तव्य	हाँ	नहीं
1.	एड्स भी एक यौन संचारित रोग है।		
2.	स्त्रियों में यौन संचारित संक्रमणों के शुरूआती लक्षण नहीं होते हैं।		
3.	एक गर्भवती स्त्री अपने अजन्मे (गर्भ के) शिशु को यौन–संचारित संक्रमण पहुँचा सकती है।		
4.	कुछ प्रजनन तंत्र संक्रमण यौन–संचारित नहीं होते हैं।		
5.	यौन संचारित रोग संक्रामक नहीं होते हैं।		
6.	यौन संचारित संक्रमण गंदे शौचालयों से होते हैं।		

2. उचित विकल्प पर सही का (✓) निशान लगाइए –

- यदि किसी के प्रजनन तन्त्र में संक्रमण हो गया हो तो उसे –

(अ) अपने मौहल्ले में स्थित नीम–हकीम से इलाज करवाना चाहिए। (ब) डॉक्टर की सलाह से दवाई लेनी चाहिए।

(स) कुछ नहीं करना चाहिए क्योंकि यह अपने आप ठीक हो जाएगा। (द) अपने परिचित मेडिकल स्टोर से दवा लेनीचाहिए।

- यदि किसी व्यक्ति को पेशाब में जलन हो रही है तथा उसे बुखार आना जैसे लक्षण हैं तो आप अनुमान लगाएँगे कि –

(अ) उसे मलेरिया हो गया है। (ब) उसे कोई यौन संक्रमण हो गया है।

(स) कमजोरी के कारण ऐसा हो गया है। (द) कुछ भी अनुमान नहीं लगा पाएँगे।